

李安纲 陈奕标 主编

诚心一字泰山高，

道德文章冰雪操。

恍遇人生百滋味，

呻吟动处听洪涛。

呻吟语

吕坤 原著 李安纲 批评



主编：李安纲 陈奕标
东方人生智慧珍品丛书

呻吟语

[明] 吕坤 原著
李安纲 批评
王无骄 漫画

中国社会出版社

图书在版编目 (CIP) 数据

呻吟语 / [明] 吕坤原著；李安纲批评。—北京：中国社会出版社，1997. 4

(东方人生智慧珍品)

ISBN 7 - 80088 - 392 - 2

I. 呻... II. ①吕... ②李... III. 人生哲学—中国—明代 IV. B825

中国版本图书馆 CIP 数据核字 (97) 第 04010 号

书 名：呻吟语

原 著：吕 坤

批 评：李安纲

责任编辑：贯 一

出版发行：中国社会出版社 邮政编码：100032

通联方法：北京市西城区二龙路甲 33 号新龙大厦

电话：66051698 63572438 电传：66051713

欢迎读者拨打免费热线 8008108114

或登录 www.bj114.com.cn 查询相关信息

经 销：各地新华书店

印 刷 厂：中国电影出版社印刷厂

开 本：787 × 1092mm 1/16

印 张：20

字 数：300 千字

版 次：2005 年 6 月修订版

印 次：2005 年 6 月第 1 次印刷

书 号：ISBN 7 - 80088 - 392 - 2 / C · 194

定 价：29.00 元

(凡中国社会版图书有缺漏页、残破等质量问题，本社负责调换)



前　　言

人跟动物的区别，在于人有精神，精神却是高雅的，所以人的目标是达到高雅。

风流儒雅是人类幸福生活的标志，所以谁都想潇洒地走一回，富贵之后就更愿意附庸风雅，再没有文化的人也不例外。

风雅并不是文化人的专利，所以谁都能达到，关键得有方法。方法就是智慧，有了智慧就会得到风雅。有了风雅，就能与世界上的任何人平起平坐而不自惭形秽，落落大方而游刃有余。

东方的人生智慧是天人合一，在大自然的花鸟虫鱼和风云雪月的声色香韵与风姿神态中净化着自己的心灵；是中庸之道，在社会中人与人相互平等与和睦相处里寻找到自我的存在价值与生活意义。我为人人，人人为我。凡事从我做起，我们帮助了别人，结果还是真正帮了自己。社会安定了，我们自己也就幸福了。我们爱护自然的同时，就是在爱护我们自己；生态平衡了，我们自己也就温饱了。

东方的智慧，是安定社会的良策，是寄托精神的支柱，是升华感情的梯航，是培养思想的武器。

怎么样拥有东方人生的智慧呢？古代的那些抒情哲学家们通过他们自己的切身体验，为我们指出了一条阳关大道——幽窗夜自吟。在幽静的夜晚，守在小窗前，望着那灿烂的星空，憧憬着美妙的人生境界，吟咏着自己宽广而又温柔的心灵。久而久之，我们的身心都与那广阔的星空、美妙的境界融为一体，实现了人生的超越而得到风神和高雅。

《幽梦影》，清代张潮著，共219条人生的领悟和自然的静赏，用幽静的态度去观察人生与自然，如梦一般的迷离，如影一般的朦胧，享受那种艺术家对生活

所拥有的感受和体验。此书在写作的过程中即得到清初 120 余位大学者和艺术家的赞赏和评点，影响极大，感人至深！

幽 幽梦一帘花影深， 清风明月露天真。
山川万物皆文史， 阅尽沧桑自在身。

《小窗幽记》，明末陈眉公著，分醒、情、峭、灵 4 篇，共 194 条人生的回味和处世的格言，谓生活中总要睁着一只眼，不能糊涂；人非无情物，如何潇洒；欲有一番作为，必须脱俗；人生何处无烦恼，超然空灵，方能享受那种文学家所拥有的品味和灵秀。

雅 青山环绕小窗幽， 修竹白云一水流。
烦恼尽随落花去， 神心却在柳枝头。

《围炉夜话》，清代王永彬著，共 184 条人生的哲理和行为的标准，虽然是寒冷的冬天，但正好可以围着温暖的炉火，在寂静的夜晚讨论着人是什么以及如何做人，那不仅自己可以清醒，而且更能享受一个哲人那样对人生的思辩和觉悟。

淡 淡于嗜欲淡于缘， 别是人间不系帆。
参透浮生真谛了， 饥来吃饭困来眠。

《小窗自纪》，明代吴从先著，共 400 余条人生的反思和心灵的写照，无论是古往今来的名家名篇，还是天地宇宙的万事万物，都可以体现交融在我的心灵之中，小小芸窗却涵盖了大千世界，是一种诗人所捕捉到的人生灵感和境界。

韵 月到窗前疏影折， 风行水面自成文。
松声野韵清魂魄， 意气飘然鸾鹤群。

《呻吟语》，明代吕坤著，分性命、存心、伦理、谈道、修身、问学、应务、养生、天地、世运、圣贤、品藻、治道、人情、物理、广喻、词章等类，探讨人之良心伦理与处世智慧，包含了全部的道德规范，人们只有共同遵守约定俗成的规范，才能活得潇洒自在。欲得自由，先受约束，约束就是对自我的超越，从而



享受那种伦理学家所拥有的人生概念和存在逻辑。

诚 诚心一字泰山高， 道德文章冰雪操。
 忧患人生百滋味， 呻吟动处听洪涛。

为了真正了解东方人的智慧，并使我们现代人在生活中得到借鉴，从而适应飞速发展的时代和节奏，我们策划并主编了这套“东方人生智慧珍品丛书”。我们将前人的这五部著作整理出来，并且用现代人的眼光来加以审视，深入浅出，阐述议论，使读者在悠闲的品味中享受人生的盛宴。我们不敢说，我们的“批评”每一篇都很精彩，但至少有一点，我们所写出来的每一个字都是真实的，都是自己对人生的感受和领略。

让我们在这条心灵的完善道路上相伴而行！

批评者

2005年5月于京华



批评

目 录

性命篇

| | | |
|-----|---------------|------|
| 101 | 鬼神与梦魂 | (1) |
| 102 | 大气与形体 | (3) |
| 103 | 真机与真味 | (3) |
| 104 | 性分与情欲 | (5) |
| 105 | 六合与圣人 | (6) |
| 106 | 人性与天气 | (7) |
| 107 | 阴阳与存亡 | (8) |
| 108 | 五行与生物 | (9) |
| 109 | 见性与生情 | (10) |
| 110 | 无体质而用无穷 | (11) |
| 111 | 念头与气血 | (12) |
| 112 | 君子与小人 | (14) |

存心篇

| | | |
|-----|---------------|------|
| 113 | 心灵与天平 | (16) |
| 114 | 收放心与追放豚 | (17) |
| 115 | 不动气与事事好 | (18) |
| 116 | 放心与邪正 | (19) |
| 117 | 放心与收心 | (20) |
| 118 | 防欲与力善 | (21) |
| 119 | 屋漏与宇宙 | (22) |
| 120 | 万善与百邪 | (23) |
| 121 | 畏法与畏理 | (24) |

| | | |
|-----|----------------|------|
| 122 | 妄见与妄闻..... | (25) |
| 123 | 无心与有心..... | (26) |
| 124 | 虚静与主张..... | (27) |
| 125 | 浮躁心与委靡心..... | (28) |
| 126 | 涵蓄与浑厚..... | (29) |
| 127 | 待事与养心..... | (30) |
| 128 | 胸中景与眼前景..... | (31) |
| 129 | 怕理与待人..... | (32) |
| 130 | 主静与勇力..... | (33) |
| 131 | 摆脱与沾恋..... | (34) |
| 132 | 我心与天地..... | (35) |
| 133 | 尘芥与荆棘..... | (36) |
| 134 | 心灵与万事..... | (37) |
| 135 | 蓄疑与过思..... | (38) |
| 136 | 迷人之迷与明人之迷..... | (39) |
| 137 | 忍激与祸福..... | (40) |
| 138 | 殃咎与快心..... | (41) |
| 139 | 坦荡荡与常戚戚..... | (42) |
| 140 | 恶恶与乐善..... | (43) |
| 141 | 有见闻与无见闻..... | (44) |
| 142 | 种子与果实..... | (45) |
| 143 | 带走带不走..... | (46) |
| 144 | 心虚与心实..... | (47) |
| 145 | 大公与天下..... | (48) |
| 146 | 心灵与躯壳..... | (49) |
| 147 | 圣人与狂人..... | (50) |
| 148 | 恕心与罪过..... | (51) |
| 149 | 七尺与方寸..... | (53) |
| 150 | 生门与死户..... | (54) |
| 151 | 心念与天知..... | (55) |
| 152 | 气血与涵养..... | (57) |
| 153 | 大公与自私..... | (58) |
| 154 | 平反与天理..... | (59) |
| 155 | 刀剑与寇仇..... | (60) |
| 156 | 为恶与为善..... | (61) |
| 157 | 人心与家贼..... | (62) |
| 158 | 虚实与大小..... | (63) |



伦理篇

| | | |
|-----|-------|------|
| 159 | 家长与修养 | (65) |
| 160 | 富贵与淫逸 | (66) |
| 161 | 门户与气焰 | (67) |
| 162 | 家庭与自我 | (68) |

谈道篇

| | | |
|-----|-------|------|
| 163 | 太平的定义 | (70) |
| 164 | 意味与至宝 | (71) |
| 165 | 损己与矫偏 | (72) |
| 166 | 七情与五性 | (74) |
| 167 | 自然与当然 | (75) |
| 168 | 身心与外物 | (77) |
| 169 | 性生与情死 | (78) |
| 170 | 闻道与幸福 | (79) |
| 171 | 兵法与处世 | (80) |
| 172 | 一身与万类 | (81) |
| 173 | 恻欲与无欲 | (82) |
| 174 | 爱欲与烦恼 | (83) |
| 175 | 安虑与止水 | (84) |
| 176 | 相同与不同 | (85) |
| 177 | 利刃与迅炮 | (86) |
| 178 | 病痛与根本 | (88) |
| 179 | 三教与戒律 | (89) |
| 180 | 鬼神与教化 | (90) |
| 181 | 我心与世界 | (92) |
| 182 | 道深与言浅 | (93) |
| 183 | 从容与急遽 | (94) |
| 184 | 聪明与富贵 | (95) |
| 185 | 有我与无我 | (96) |



修身篇

| | | |
|-----|-------|-------|
| 186 | 六合与人我 | (98) |
| 187 | 环境与修养 | (99) |
| 188 | 余气与受用 | (100) |



| | | |
|-----|-----------|-------|
| 189 | 做人与其他 | (101) |
| 190 | 谨德与养生 | (102) |
| 191 | 处己与处人 | (103) |
| 192 | 精明与愚蠢 | (104) |
| 193 | 心胸与天下 | (105) |
| 194 | 嫉妒与诋毁 | (107) |
| 195 | 善恶与忠奸 | (108) |
| 196 | 违众与违己 | (109) |
| 197 | 有过与无过 | (110) |
| 198 | 万全与缺绽 | (111) |
| 199 | 心身与操劳 | (112) |
| 200 | 俗念与俗眼 | (114) |
| 201 | 现在与到头 | (115) |
| 202 | 智愚祸福与贫富毁誉 | (116) |
| 203 | 可人意与可我意 | (118) |
| 204 | 盗跖、伯夷与老子 | (119) |
| 205 | 城池与门户 | (120) |
| 206 | 气盛、心满与才露 | (121) |
| 207 | 名心与作伪 | (122) |
| 208 | 自是与自私 | (124) |
| 209 | 贫贱与老残 | (125) |
| 210 | 所不能与所当尽 | (126) |
| 211 | 知足与无厌 | (127) |
| 212 | 天人与自我 | (128) |
| 213 | 分内与分外 | (130) |
| 214 | 笑人与可笑 | (131) |
| 215 | 闻毁与怒毁 | (132) |
| 216 | 贪爱与制欲 | (133) |
| 217 | 不平事与浅薄子 | (134) |
| 218 | 祸福与生死 | (135) |
| 219 | 处世之十态 | (137) |
| 220 | 本色与近情 | (141) |
| 221 | 毁谤与君子 | (142) |
| 222 | 自亡与他亡 | (144) |
| 223 | 出言与见义 | (145) |
| 224 | 刚明与婉晦 | (146) |
| 225 | 处身和待人 | (147) |



| | | |
|-----|-------|-------|
| 226 | 有过与认过 | (148) |
| 227 | 爱身与贵名 | (149) |
| 228 | 相反与相似 | (150) |
| 229 | 多门与多口 | (151) |
| 230 | 本意与分外 | (152) |
| 231 | 殃子孙十条 | (154) |
| 232 | 命法与理势 | (155) |
| 233 | 自责与自反 | (157) |
| 234 | 贫富与贵贱 | (158) |
| 235 | 君子求四真 | (159) |
| 236 | 说话是难事 | (161) |
| 237 | 益世与损世 | (162) |
| 238 | 安常与盛满 | (163) |
| 239 | 自责与相责 | (164) |
| 240 | 不逐物工夫 | (165) |
| 241 | 不作空躯壳 | (166) |

问学篇

| | | |
|-----|-------|-------|
| 242 | 读书与做人 | (167) |
| 243 | 口耳与身心 | (168) |
| 244 | 吾心与觉悟 | (170) |
| 245 | 学者与器度 | (171) |
| 246 | 学者与仕者 | (173) |
| 247 | 学问与修养 | (174) |
| 248 | 学病与静治 | (176) |
| 249 | 读书与寡过 | (177) |
| 250 | 学之与讳之 | (178) |
| 251 | 好处不好处 | (180) |
| 252 | 一己与天下 | (181) |
| 253 | 中字与敬字 | (182) |
| 254 | 性急与性缓 | (183) |
| 255 | 随人与自得 | (184) |

应务篇

| | | |
|-----|---------|-------|
| 256 | 纤徐与迫切 | (186) |
| 257 | 难任事与难处人 | (187) |
| 258 | 下手与见功 | (189) |

| | | |
|-----|----------|-------|
| 259 | 察观与度量 | (190) |
| 260 | 智愚与巧拙 | (192) |
| 261 | 爱人与恶人 | (193) |
| 262 | 浑厚与涵蓄 | (194) |
| 263 | 与小人相处 | (196) |
| 264 | 果决与因循 | (197) |
| 265 | 使气与使心 | (198) |
| 266 | 自得与天遇 | (199) |
| 267 | 共事与成败 | (201) |
| 268 | 当然、自然与偶然 | (202) |
| 269 | 刚柔与彼此 | (203) |
| 270 | 有余与救性 | (204) |
| 271 | 无识见与偏识见 | (205) |
| 272 | 支吾与废弛 | (206) |
| 273 | 人生五休不 | (207) |
| 274 | 毁誉、利害与巧罪 | (209) |
| 275 | 处事与长民 | (210) |
| 276 | 顺境最难处 | (211) |
| 277 | 是非与利害 | (213) |
| 278 | 善用人与不善用人 | (214) |
| 279 | 从是与不从不是 | (215) |
| 280 | 轻生死与善用死 | (216) |
| 281 | 争利与争言 | (218) |
| 282 | 过错与责让 | (219) |

养生篇

| | | |
|-----|-------|-------|
| 283 | 多美与冷淡 | (221) |
| 284 | 独觉与独当 | (223) |

天地篇

| | | |
|-----|-------|-------|
| 285 | 光明与不言 | (224) |
| 286 | 昼夜与日星 | (225) |
| 287 | 水火与虚实 | (226) |
| 288 | 遂恶与祸亡 | (227) |
| 289 | 欺心与欺天 | (228) |



世运篇

- 290 世人难与言 (230)

圣贤篇

- 291 圣人与凡人 (233)
292 天道与圣人 (234)
293 圣人平天下 (236)

品藻篇

- 294 小人荐与君子弃 (238)
295 士人三不顾 (239)
296 士人与死物 (241)
297 达人智士与忠臣孝子 (243)
298 无心与无我 (245)
299 圣贤乐与众人乐 (246)
300 当事与说理 (247)
301 居官三念头 (249)
302 修养与境遇 (250)
303 聪明与昏愚 (251)
304 读书人与做官人 (253)

治道篇

- 305 兴利与革弊 (255)
306 为政的道理 (256)
307 为政与世教 (258)
308 无伪与不争 (260)
309 一人与天下 (262)
310 宇宙有三纲 (263)
311 只干正经事 (264)
312 权利与公私 (266)
313 刑战与劝悔 (267)
314 居官有五要 (268)
315 一欲与百欲 (270)
316 做官好与做好官 (271)
317 情世界与法世界 (272)



批判

- 318 无才君子与有才小人 (273)
319 好蹊践与难收拾 (274)
320 农夫与织妇 (275)

人情篇

- 321 掩过与喜誉 (276)
322 相非与自是 (277)
323 已美与人美 (279)
324 无祸与求福 (280)
325 人生三大妒 (282)
326 泰然与安稳 (283)

物理篇

- 327 钉子与锁子 (286)
328 相忘于所生 (287)



广喻篇

- 329 坐井与游天 (289)
330 圣人鉴尺权 (290)
331 无我与空有 (292)
332 爱小体与毁大体 (293)
333 瓦砾与君子 (295)
334 挹刃与挞杀 (296)

词章篇

- 335 胸中与眼前 (298)
336 文章与明道 (299)
- 后记 (302)

性 命 篇

101 鬼神与梦魂

或问：“人将死而见鬼神，真耶？”曰：“人寤则为真见，梦则为妄见。魂游而不附体，故随所之而见物，此外妄也；神与心离合而不安定，故随所交而成景，此内妄也。故至人无梦，愚人无梦，无妄念也。人之将死，如梦然，魂飞扬而乱于目，气浮散而邪客于心，故所见皆妄，非真有也。或有将死而见人拘系者，尤妄也。异端之语入人骨髓，将死而惧，故常若有见。若死必有召之者，则牛羊蚊蚋之死，果亦有召之者耶？大抵草木之生枯，土石之凝散，人与众动之死生、始终、有无，只是一理，更无他说。万一有之，亦怪异也。”

【批 评】

古人认为鬼神之说，不可全信，亦不可不信。照我们的说法，古人以神道设教，建立鬼神体系的目的，是为了教化人民，让他们向善而厌恶。人做好了，社会安定，人生幸福，死后便能够升上天堂；为人不好，良心没有，无恶不作，死后一定要下入地狱。因为人类都关心着自己的未来，叫做终极关怀，所以都不愿意在死去后去受罪。这样以来，大家都会在人间的时候把人做好，讲究伦理道德，社会也就好统治了。鬼神就是在这样的需求下产生的。那么鬼神到底是个什么样子呢？人们便根据自己心目中的理解去塑造，善良的神祇会面貌亲善，而恶劣的鬼神会是面目狰狞。

鬼神毕竟是人类精神上的产物，所以是没有形状的。如果说还有什么形状的话，那也是由人造出来的。有人问吕坤人死的时候会见到鬼神，是真的还是假的呢？他回答说：

“人清醒的时候所见到的就是真的，做梦时见到的就是假的。自己的灵魂到处游荡而不附体，走到什么地方都会看到东西，这就是外在的虚妄；而精神与自己的心灵时离时合并且无法使心灵安定，随他所接触到的东西都就变成了景象，

这就是内在的虚妄。所以，那些真正的人是没有梦的，愚昧的人也是没有梦的，因为他们已经没有了妄念。人将要死的时候，也像是在做梦一样。灵魂飞扬，而精神混乱在目前；正气飘浮离散，而邪气主宰了自己的心田。这时所见到的东西都是虚妄的，绝不是真正的现实所有的。或者有的人将要死去的时候，会见到有人来捆绑自己，那就尤其虚妄了。



“这主要是由于受到异端邪说的影响，比如说人死后会被捉下地狱去接受阎罗王的审判，作恶者要遭受各种各样的痛苦惩罚，等等。这些说法已经深入到了人的骨髓之中，将死的时候便心怀恐怖——所以常常会看到这样的情况。若是死亡一定是有人来召唤的话，那么那些牛羊、蚊子和蚂蚁的死，也一定会有人去召唤它们的吗？总体说来，花草与树木的发生与枯萎，尘土与石头的凝聚和离散，人类与各种动物的死亡与生存、开始与终了、实有与虚无等，只是一个道理，再也没有什么别的说法。万一要是有个什么说法，也是一种怪异啊！”

这里明确指出，人是不会见到鬼神的，鬼神只是人们心中的一种幻相而已。由于受

到异端邪说的教育和熏陶，人们在意识里便生存着神鬼的概念。一到那做梦或者将死的时候，意志衰弱，心魂不定，意识中的那些神鬼概念便随之而出，也就会上见到鬼神了。大家都有过这样的体验，不少的人在一起，可就是那些身体衰弱的人容易看到各种异相。可知，这鬼神就在人自己的心里。

当然，古人设立鬼神的目的是为了统治人民，使大家拥有一种稳定的秩序，从而生活得幸福一些。而那些当官者，也正是因为上帝和鬼神的存在，而不敢胡作非为。他们害怕天谴和冥报，因而就必须遵守道德与法则，相对说来给人民带来了一点好处。但是到了现在，没有了神鬼，首先开心的是那些当官不为民做主的人。他们可以任意胡作非为，欺压百姓，贪污腐化，坑蒙拐骗，而不需要有任何的心灵负担。因为人间的法律操纵在他们的手里，冥冥之中又没有任何监督和约束，他们能不胡来吗！

有了鬼神，还可以给生活在水深火热中的百姓一点安慰，争取死后有个好的归宿；没有了鬼神，反而给那些贪官污吏提供了为非作歹的条件！看来，从安定社会的角度来说，还是应该确立鬼神的概念，使好人安宁而恶人胆寒！



102 大气与形体

气，无终尽之时。形，无不毁之理。

【批评】

古人认为在我们所居住生活的空间之外，包裹着一层大气。而且这大气又无所不在，无所不能，是我们与万物生活的主宰。理学家把它称做理气，道家称之为道，佛家称之为禅，西方称之为上帝。当然，我们常说，上帝是永恒的，而人类是短暂的。同样，大气是永恒的，而形体却是短暂的。

人类也同万物一样，是有形体的。这形体却不是一开始就拥有的，而是有生也有死。大气因为没有形状，所以谁也无法把它损坏；形体因为占有空间的障碍，所以谁都可以将其损坏。《老子》说过：“大音希声，大象无形。”因为无声，所以谁也无法把它猜测；因为无象，所以谁也无法将其把握。

既然如此，我们的形体是无法执著的，因为它总有毁坏的一天；即使是修成了金刚不坏之躯，也同样要有被摧毁的时候。而惟一不被摧毁的就是虚空和大气。如果我们能够把自己的形体与大气相融合，顺其自然，不贪婪自己的形体，也许真正能够得到永恒。就是《老子》说的：“吾所以有大患者，为吾有身；及吾无身，吾有何患！”有了形体，我们就得为它奋斗和竞争，所以有烦恼和痛苦；没有了形体，就会自由而幸福。可见，要幸福就得要去掉自己的形体。

不过，去掉形体就是死，死了并不见得能够解决任何问题。那么惟一能够解决问题的办法，就是心中无挂碍。不把形体当做一回事了，生活岂不就变得自在了！



103 真机与真味

真机、真味要涵蓄，休点破，其妙无穷，不可言喻，所以圣人无

批评